रसा दीदी यानी मा योग भक्ति जी से साक्षात्कार (2016)

ओशो जब पहली और अंतिम बार रोए

ओशो से दो साल छोटी उनकी बहन 'रसा' से मिलने की बात ही कुछ और है। उन्होंने ओशो के बचपन को बहुत ही नजदीक से देखा व अनुभव किया है यहां तक कि वह उन सब गुणों एवं लक्षणों की गवाह रही हैं जो ओशो में बचपन में ही प्रकट होने लगे थे। प्रस्तुत है इसी विषय पर लिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश।

प्रश्न- आपका नाम ही अपने आप में एक सवाल पैदा करता है। क्या यह भी ओशो ने ही रखा था?

उत्तर- हां मेरा नाम 'रसा' ओशो ने ही रखा था। पहले मेरा नाम रेशम था। दरअसल हमारी एक बुआ थीं उनका नाम मखमल था तो घर में मेरा नाम रेशम रखा गया। लेकिन एक दिन जब ओशो, चाचा के साथ जब मेरा स्कूल में नाम लिखाने मुझे ले गए तो ओशो ने कहा तुम्हारा यह नाम अच्छा नहीं है, फिर दोनों ने कहा तुम्हारा नाम रशा रखते हैं। उस समय वह लोग रूस से बहुत प्रभावित थे तो उन्होंने मेरा नाम 'रशा' रखा जिसे फिर उन्होंने रसा कर दिया। यह नाम मुझे पसंद भी आया। तो उन्होंने रेशम से रसा नाम दिया तथा संन्यास के बाद मुझे 'मा योग भक्ति' नाम दिया।

प्रश्न- ओशो के साथ बिताए अपने बचपन के बारे में कुछ बताएं?

उत्तर- हम भले ही आम भाई-बहन की तरह रहे पर बचपन से ही उनमें एक अलग ही आकर्षण था जिस तरह सभी भाई-बहनों में झगड़े होते हैं हमारे बीच उस तरह से कभी नहीं हुए। छोटी उम्र में भी कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ। वह बचपन से ही मेरा खूब ख्याल रखते थे। वह मुझे बेशुमार प्यार करते थे।

मुझे याद है मैं छठी कक्षा में थी। स्कूल में हर शनिवार को बच्चों को एक विषय दिया जाता था जिस पर उन्हें बोलना पड़ता था। उस वक्त नेताओं का बड़ा जोर था और मुझे उन पर बोलना आता नहीं था, तो ओशो मुझे पूरा निबंध लिखकर दे देते थे। जिसे बोल कर मैं हमेशा अव्वल आती थी। इसकी वह मुझे पूरी ट्रेनिंग देते थे। घर में जिस टेबल पर हम पढ़ते-लिखते थे ओशो मुझे उस पर खड़ा कर देते थे और फिर तीन-चार बार मुझे वह लेख पढ़वाते थे और फिर कहते थे अब बिना देखे बोलो और जब उनको लगता था कि मैं सही ढंग से बोल रही हूं तभी मुझे छोड़ते थे।

प्रश्न- बचपन में ओशो किस तरह के खेल-खेलते थे या खेल जो उन्हें पसंद थे।

उत्तर- खेल तो उनको सभी पसंद थे पर घर में हम ताश व कैरम खूब खेलते थे हम सब भाई-बहन, चाचा-बुआ आदि सब मिलकर खेलते थे। छुट्टियों में तो रात के दो-दो बज जाया करते थे। इसके अलावा ओशो को पतंग उड़ाने का भी खूब शौक था, यहां तक कि वह पूर्णिमा की देर रात तक भी पंतग उड़ाते थे। रात के एक-डेढ़ बजे से पहले तो ओशो घर आते ही नहीं थे। नदी पर घूमना, श्मशान में घूमना, शक्कर नदी के तट पर समय गुजारना, और दोस्तों के साथ गप्पें मारना उनको प्रिय था। ओशो को चित्रकारी का भी बहुत शौक था। वह चित्रकारी में मोर तथा गागरी लेकर पनिहारिन की तस्वीर खूब बनाते थे।

ओशो के इन क्रियाकलापों के कारण तथा रात के दो-दो बजे तक घर लौटने के कारण एक दिन पिता जी नाराज हो गए थे, क्योंकि बाकि लड़कों के पिता भी शिकायत करने लगे थे, कि तुम्हारे लड़के की वजह से हमारे लड़के बिगड़ रहे हैं तो एक दिन पिताजी दरवाजा पर डण्डा लेकर तैनात थे, और मां को कहा कि तुम दरवाजा मत खोलना आज मैं ही दरवाजे खोलूंगा। मां ने क्या किया चुपके से घर के पीछे का दरवाजा खोल दिया। ओशो भी खूब चालाक वो उस रात पीछे के दरवाजे से आए और चुपचाप सो गए। दो बजे रात को दद्दा बड़बड़ाते रहे बाद में पता चला कि भईया तो सो गए।

प्रश्न- ओशो के शिक्षकों का उनके प्रति क्या रवैया था?

उत्तर- ओशो से उनके सभी शिक्षक घबराते थे, क्योंकि वह ऐसे-ऐसे सवाले करते थे, कि उनके पास उसके उत्तर नहीं होते थे और जो ओशो तर्क देते थे तो उसके आगे शिक्षक कुछ बोल नहीं पाते थे। इन सबके कारण ओशो को शिक्षकों से फटकार मिलती थी बल्कि उन्हें कक्षा से बाहर भी निकाल दिया जाता था।

एक बार सजा के तौर पर एक शिक्षक ने ओशो को मैदान के दस चक्कर लगाने को कहा। ओशो तो ओशो हैं, वह तो हर काम को मौज से करते थे। उन्होंने पूरी मस्ती एवं धीमी गति के साथ चक्कर लगाना शुरू किया। स्कूल की छुट्टी हो गई मास्टर घर जाने को था, मास्टर ने कहा अब बस करो तो ओशो ने कहा 'अभी दस चक्कर नहीं हुए और जब तक दस चक्कर नहीं होंगे आप भी यहीं रहेंगे, क्योंकि सजा मुझे आपने दी है।' ओशो की इस हरकत के आगे मास्टर भी हार गया।

प्रश्न- जैसा कि आपने बताया कि ओशो बचपन से ही बड़े उपद्रवी और शैतान थे, ऐसे में उनके भविष्य व कॅरियर को लेकर घर वालों की क्या सोच थी?

उत्तर- बचपन में सभी घर वालों को लगता था कि यह तो नकारा है यह भविष्य में कुछ भी नहीं करने वाला। यहां तक कि हमारे बाबा भी यही सोचते थे, क्योंकि ओशो का पढ़ाई-लिखाई में कोई मन नहीं था, दिन भर घूमता रहता है और इधर-उधर की बातें पूछता रहता था।

घर वाले तो ओशो को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते थे, परंतु ओशो को दर्शनशास्त्र पसंद था इसलिए ओशो ने जब दर्शनशास्त्र को चुना तो परिवार में चाचा वगैरह उनसे नाराज हुए, यहां तक कि वह ओशो को खर्चे के लिए भी पैसे नहीं देते थे। तो ओशो ने अपने खर्चे के लिए 'नवभारत टाइम्स' समाचार पत्र में कुछ समय के लिए संपादन का कार्य भी किया और उसकी तनख्वाह से अपनी पढ़ाई को पूरा किया।

पढ़ाई पूरी होने के बाद भी ओशो ने घर वालों से कोई खर्चा नहीं लिया। बल्कि अपने दोनों भाइयों अकलंक और निकलंक को पढ़ाने का खर्चा भी स्वयं उठाया।

प्रश्न- भले ही ओशो बचपन में कितने ही शैतान रहे हों पर घर-परिवार में ऐसा कोई था जिसे दिखता था कि ओशो का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है या वह बहुत प्रतिभावान हैं?

उत्तर- हां, हमारे बाबा को दिखता था। वो जब भी किसी का भाषण सुनने जाते थे तो ओशो को जरूर साथ ले जाते थे, और कह कर रखते थे कि तेरे मन में जो भी प्रश्न हो उसे निःसंकोच पूछ लेना और जब ओशो पूछते थे तो बोलने वाले के पास कोई जवाब नहीं होता था और वे हाथ जोड़कर अपनी व्यवस्था करने वालों को कहते थे कि 'इस लड़के को सभा में मत आने देना, क्योंकि हम ठीक से बोल नहीं पाते।' तभी से बाबा को लगने लगा था कि ओशो अन्य बच्चों से एकदम अलग हैं तथा इसमें गजब की प्रतिभा छिपी है।

साथ ही, ओशो 15-16 साल के रहे होंगे कि मां को यह महसूस होने लगा था कि ओशो कुछ अलग हैं। मां इनकी सारी बातें मानती थीं, क्योंकि ओशो सब कुछ तर्क से सिद्ध करते थे। पहले मजबूरन मानती थीं बाद में प्रेम से मानने लगीं। जो भी ओशो ने कहा वह उससे सहमत हो जाती थीं।

प्रश्न- आपके विवाह पर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर- क्योंकि ओशो घर में सबसे बड़े और समझदार थे इसलिए मेरी शादी पर उनके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी थी। मां बताती हैं कि ओशो मेरी शादी पर इतने व्यस्त थे, कि मेरी विदाई नहीं देख पाए इसलिए मेरे जाने के बाद वह खूब रोए और रोते-रोते बोले कि 'दद्दा ने मुझे ठीक से शादी तक नहीं देखने दी, ऐसी कैसी शादी हुई मुझे काम में उलझाए रखा और रसा चली गई।' मां कहती हैं उन्होंने ओशो को पहली और अंतिम बार रोते देखा था। तब वह मेरे गले लग के बिलख-बिलख कर रोया था।

प्रश्न- ओशो के जीवन में प्रेमिका को लेकर 'शशि' का जिक्र आता है, कुछ उसके बारे में बताएं?

उत्तर- 'शशि' जिसका जिक्र ओशो अपने पहले प्रेम के रूप में करते हैं वह मेरी हम उम्र थी, मेरी सहेली थी। वह पढ़ाई-लिखाई में भी बहुत होशियार थी। बारह वर्ष की आयु में तो वह टायफाइड से मर गई थी। ओशो और उसका प्रेम बड़ा ही खूबसूरत था। जैसे स्कूली दिनों में दो मित्रों का होता है। ओशो उसको नोट्स बना-बना कर देते उसकी पढ़ाई-लिखाई में मदद करते थे और जैसी शैतानियां, मजाक या खेल-कूद आदि उस उम्र में होता है वह सब था।

प्रश्न- ओशो गुरु बन गए, संन्यास देने लगे कुछ लोगों को यह बात अखरने लगी थी। ओशो की इस छवि को स्वीकारना या उनसे संन्यास लेना घर वालों के लिए कितना आसान या मुश्किल था?

उत्तर- शुरू-शुरू में तो मुश्किल था। मैं अपनी बताऊं, मेरा संन्यास लेने का अंतरभाव तो था, परंतु ऊपर से यह बात मैं अपने पति को नहीं कह पाई थी। मैं अपनी नानी के गुजरने के बाद तेरहवी के लिए अपने पति व बच्चों के साथ वहां गई तो ओशो का जमघट वहां जमा ही था, 40-50 लोगों से ओशो घिरे थे, उनके प्रवचन चल रहे थे। लोग संन्यास ले रहे थे तब एक माला उन्होंने मेरे लिए संभाल कर रखी थी। जब मैं पैर छूने गई तो उन्होंने धीरे से कहा 'रसा क्या संन्यास लेना है? ' मैंने कहा 'दे दो' उन्होंने माला गले में डाल और एक कागज पर नाम लिख दे दिया। यह सब देखकर मेरे पति गुर्रा रहे थे, उन्होंने अपनी आंखे गुस्से से लाल कर ली और बोले 'तूने मेरे से पूछे बिना संन्यास ले लिया।' इसीलिए उन्होंने साल-छः महीने तक मेरे लिए भगवा वस्त्रों की भी व्यवस्था नहीं की। मैंने अपनी एक-दो साड़ियां जो हल्के रंग की थी उन्हें गेरुए रंग में रंगवा कर पहनी। ऐसे मैंने दो साड़ियों में एक साल गुजारा पर धीरे-धीरे उन्हें मेरी बात समझ आने लगी, फिर तो वह मेरे लिए वस्त्र भी ला देते थे। स्वीकारने भी लगे थे फिर बहुत बाद में तो उन्होंने भी ओशो से संन्यास लिया।

प्रश्न- पूना आश्रम के दौरान कोई ऐसी बात जो उन्होंने आपसे साझा की हो?

उत्तर- ऐसी तो कई बातें हैं पर एक बात जो वो कई बार कहते थे, वो ये कि 'मुझे यहां लोग समझ नहीं पा रहे हैं। यहां मेरा काम बहुत सीमित हो गया है, मुझे अपना काम पूरी दुनिया में फैलाना है। जब तक बाहर नहीं जाऊंगा तब तक वह काम फैलेगा भी नहीं।'

प्रश्न- ओशो ने जब शरीर छोड़ा तब आप कहां थीं, आपने उस घटना को किस तरह से लिया?

उत्तर- ओशो ने जब शरीर त्यागा तब मैं वहां नहीं थी। मुझे ओशो की मृत्यु की कोई खबर नहीं मिली, वह खुद आए। मैं बगीचे में शाम को पांच बजे कुछ बीज बो रही थी, उस दिन नौकर नहीं आया था और समय निकला जा रहा था इसलिए मैं बड़े गुस्से में थी इतने में ओशो एक तेज सूर्य की तरह पीछे से आ गए, जबकि सूर्य डूबने को था, तब पता चला वह प्रकाश सूर्य का नहीं था। फिर उन्होंने कहा 'रसा तू जो भी करती है होश से किया कर' यह उनका अंतिम उपदेश है मेरे लिए। जब यह बात मैंने सुनी तब मुझे नहीं पता था कि ओशो शरीर त्याग चुके हैं। जब मैं उठकर कमरे तक आई तो मुझे महसूस हुआ कि वह साथ-साथ चल रहे हैं यहां तक कि मैंने उनके गाऊन को भी हिलता हुआ महसूस किया। मैं पलंग पर बैठी ही थी कि दिल्ली से प्रतीक्षा (भतीजी) का फोन आता है। मैं बहुत ऊर्जा से भरी थी इसलिए मैं फोन उठाने के लिए अपनी बहू को बोलती हूं। इससे पहले कि बहू फोन पर कोई उत्तर देती, हंसते-हंसते मेरे मुंह से निकला कि 'ओशो ने देह छोड़ दी क्या?'

यह सुनते ही बहू मेरी तरफ देखने लगी और बोली कि प्रतीक्षा दीदी भी फोन पर यही कह रही हैं कि ओशो ने देह छोड़ दी। मैंने कहा- वो मुझे तो आकर बता गए हैं कि वह जा चुके पर फिर भी वह कहीं नहीं गए हैं।

आज आश्रम में भी जाओ तो उनका आभाव नहीं लगता उनकी मौजूदगी अभी भी महसूस होती है। इस बात का मैं अहंकार नहीं करूंगी पर सच बात तो यह है कि मुझे जब उनका सान्निध्य चाहिए वो मुझे सदा मिल जाता है।

-शशिकांत 'सदैव'

संपादकः 'साधना पथ' मासिक पत्रिका

ओशो जब पहली और अंतिम बार रोए

ओशो से दो साल छोटी उनकी बहन 'रसा' से मिलने की बात ही कुछ और है। उन्होंने ओशो के बचपन को बहुत ही नजदीक से देखा व अनुभव किया है यहां तक कि वह उन सब गुणों एवं लक्षणों की गवाह रही हैं जो ओशो में बचपन में ही प्रकट होने लगे थे। प्रस्तुत है इसी विषय पर लिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश।

प्रश्न- आपका नाम ही अपने आप में एक सवाल पैदा करता है। क्या यह भी ओशो ने ही रखा था?

उत्तर- हां मेरा नाम 'रसा' ओशो ने ही रखा था। पहले मेरा नाम रेशम था। दरअसल हमारी एक बुआ थीं उनका नाम मखमल था तो घर में मेरा नाम रेशम रखा गया। लेकिन एक दिन जब ओशो, चाचा के साथ जब मेरा स्कूल में नाम

लिखाने मुझे ले गए तो ओशो ने कहा तुम्हारा यह नाम अच्छा नहीं है, फिर दोनों ने कहा तुम्हारा नाम रशा रखते हैं। उस समय वह लोग रूस से बहुत प्रभावित थे तो उन्होंने मेरा नाम 'रशा' रखा जिसे फिर उन्होंने रसा कर दिया। यह नाम मुझे पसंद भी आया। तो उन्होंने रेशम से रसा नाम दिया तथा संन्यास के बाद मुझे 'मा योग भक्ति' नाम दिया।

प्रश्न- ओशो के साथ बिताए अपने बचपन के बारे में कुछ बताएं?

उत्तर- हम भले ही आम भाई-बहन की तरह रहे पर बचपन से ही उनमें एक अलग ही आकर्षण था जिस तरह सभी भाई-बहनों में झगड़े होते हैं हमारे बीच उस तरह से कभी नहीं हुए। छोटी उम्र में भी कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ। वह बचपन से ही मेरा खूब ख्याल रखते थे। वह मुझे बेशुमार प्यार करते थे।

मुझे याद है मैं छठी कक्षा में थी। स्कूल में हर शनिवार को बच्चों को एक विषय दिया जाता था जिस पर उन्हें बोलना पड़ता था। उस वक्त नेताओं का बड़ा जोर था और मुझे उन पर बोलना आता नहीं था, तो ओशो मुझे पूरा निबंध लिखकर दे देते थे। जिसे बोल कर मैं हमेशा अव्वल आती थी। इसकी वह मुझे पूरी ट्रेनिंग देते थे। घर में जिस टेबल पर हम पढ़ते-लिखते थे ओशो मुझे उस पर खड़ा कर देते थे और फिर तीन-चार बार मुझे वह लेख पढ़वाते थे और फिर कहते थे अब बिना देखे बोलो और जब उनको लगता था कि मैं सही ढंग से बोल रही हूं तभी मुझे छोड़ते थे।

प्रश्न- बचपन में ओशो किस तरह के खेल-खेलते थे या खेल जो उन्हें पसंद थे।

उत्तर- खेल तो उनको सभी पसंद थे पर घर में हम ताश व कैरम खूब खेलते थे हम सब भाई-बहन, चाचा-बुआ आदि सब मिलकर खेलते थे। छुट्टियों में तो रात के दो-दो बज जाया करते थे। इसके अलावा ओशो को पतंग उड़ाने का भी खूब शौक था, यहां तक कि वह पूर्णिमा की देर रात तक भी पंतग उड़ाते थे। रात के एक-डेढ़ बजे से पहले तो ओशो घर आते ही नहीं थे। नदी पर घूमना, श्मशान में घूमना, शक्कर नदी के तट पर समय गुजारना, और दोस्तों के साथ गप्पें मारना उनको प्रिय था। ओशो को चित्रकारी का भी बहुत शौक था। वह चित्रकारी में मोर तथा गागरी लेकर पनिहारिन की तस्वीर खूब बनाते थे।

ओशो के इन क्रियाकलापों के कारण तथा रात के दो-दो बजे तक घर लौटने के कारण एक दिन पिता जी नाराज हो गए थे, क्योंकि बाकि लड़कों के पिता भी शिकायत करने लगे थे, कि तुम्हारे लड़के की वजह से हमारे लड़के बिगड़ रहे हैं तो एक दिन पिताजी दरवाजा पर डण्डा लेकर तैनात थे, और मां को कहा कि तुम दरवाजा मत खोलना आज मैं ही दरवाजे खोलूंगा। मां ने क्या किया चुपके से घर के पीछे का दरवाजा खोल दिया। ओशो भी खूब चालाक वो उस रात पीछे के दरवाजे से आए और चुपचाप सो गए। दो बजे रात को दद्दा बड़बड़ाते रहे बाद में पता चला कि भईया तो सो गए।

प्रश्न- ओशो के शिक्षकों का उनके प्रति क्या रवैया था?

उत्तर- ओशो से उनके सभी शिक्षक घबराते थे, क्योंकि वह ऐसे-ऐसे सवाले करते थे, कि उनके पास उसके उत्तर नहीं होते थे और जो ओशो तर्क देते थे तो उसके आगे शिक्षक कुछ बोल नहीं पाते थे। इन सबके कारण ओशो को शिक्षकों से फटकार मिलती थी बल्कि उन्हें कक्षा से बाहर भी निकाल दिया जाता था।

एक बार सजा के तौर पर एक शिक्षक ने ओशो को मैदान के दस चक्कर लगाने को कहा। ओशो तो ओशो हैं, वह तो हर काम को मौज से करते थे। उन्होंने पूरी मस्ती एवं धीमी गति के साथ चक्कर लगाना शुरू किया। स्कूल की छुट्टी हो गई मास्टर घर जाने को था, मास्टर ने कहा अब बस करो तो ओशो ने कहा 'अभी दस चक्कर नहीं हुए और जब तक दस चक्कर नहीं होंगे आप भी यहीं रहेंगे, क्योंकि सजा मुझे आपने दी है।' ओशो की इस हरकत के आगे मास्टर भी हार गया।

प्रश्न- जैसा कि आपने बताया कि ओशो बचपन से ही बड़े उपद्रवी और शैतान थे, ऐसे में उनके भविष्य व कॅरियर को लेकर घर वालों की क्या सोच थी?

उत्तर- बचपन में सभी घर वालों को लगता था कि यह तो नकारा है यह भविष्य में कुछ भी नहीं करने वाला। यहां तक कि हमारे बाबा भी यही सोचते थे, क्योंकि ओशो का पढ़ाई-लिखाई में कोई मन नहीं था, दिन भर घूमता रहता है और इधर-उधर की बातें पूछता रहता था।

घर वाले तो ओशो को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते थे, परंतु ओशो को दर्शनशास्त्र पसंद था इसलिए ओशो ने जब दर्शनशास्त्र को चुना तो परिवार में चाचा वगैरह उनसे नाराज हुए, यहां तक कि वह ओशो को खर्चे के लिए भी पैसे

नहीं देते थे। तो ओशो ने अपने खर्चे के लिए 'नवभारत टाइम्स' समाचार पत्र में कुछ समय के लिए संपादन का कार्य भी किया और उसकी तनख्वाह से अपनी पढ़ाई को पूरा किया।

पढ़ाई पूरी होने के बाद भी ओशो ने घर वालों से कोई खर्चा नहीं लिया। बल्कि अपने दोनों भाइयों अकलंक और निकलंक को पढ़ाने का खर्चा भी स्वयं उठाया।

प्रश्न- भले ही ओशो बचपन में कितने ही शैतान रहे हों पर घर-परिवार में ऐसा कोई था जिसे दिखता था कि ओशो का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है या वह बहुत प्रतिभावान हैं?

उत्तर- हां, हमारे बाबा को दिखता था। वो जब भी किसी का भाषण सुनने जाते थे तो ओशो को जरूर साथ ले जाते थे, और कह कर रखते थे कि तेरे मन में जो भी प्रश्न हो उसे निःसंकोच पूछ लेना और जब ओशो पूछते थे तो बोलने वाले के पास कोई जवाब नहीं होता था और वे हाथ जोड़कर अपनी व्यवस्था करने वालों को कहते थे कि 'इस लड़के को सभा में मत आने देना, क्योंकि हम ठीक से बोल नहीं पाते।' तभी से बाबा को लगने लगा था कि ओशो अन्य बच्चों से एकदम अलग हैं तथा इसमें गजब की प्रतिभा छिपी है।

साथ ही, ओशो १५-१६ साल के रहे होंगे कि मां को यह महसूस होने लगा था कि ओशो कुछ अलग हैं। मां इनकी सारी बातें मानती थीं, क्योंकि ओशो सब कुछ तर्क से सिद्ध करते थे। पहले मजबूरन मानती थीं बाद में प्रेम से मानने लगीं। जो भी ओशो ने कहा वह उससे सहमत हो जाती थीं।

प्रश्न- आपके विवाह पर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर- क्योंकि ओशो घर में सबसे बड़े और समझदार थे इसलिए मेरी शादी पर उनके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी थी। मां बताती हैं कि ओशो मेरी शादी पर इतने व्यस्त थे, कि मेरी विदाई नहीं देख पाए इसलिए मेरे जाने के बाद वह खूब रोए और रोते-रोते बोले कि 'दद्दा ने मुझे ठीक से शादी तक नहीं देखने दी, ऐसी कैसी शादी हुई मुझे काम में उलझाए रखा और रसा चली गई।' मां कहती हैं उन्होंने ओशो को पहली और अंतिम बार रोते देखा था। तब वह मेरे गले लग के बिलख-बिलख कर रोया था।

प्रश्न- ओशो के जीवन में प्रेमिका को लेकर 'शशि' का जिक्र आता है, कुछ उसके बारे में बताएं?

उत्तर- 'शशि' जिसका जिक्र ओशो अपने पहले प्रेम के रूप में करते हैं वह मेरी हम उम्र थी, मेरी सहेली थी। वह पढ़ाई-लिखाई में भी बहुत होशियार थी। बारह वर्ष की आयु में तो वह टायफाइड से मर गई थी। ओशो और उसका प्रेम बड़ा ही खूबसूरत था। जैसे स्कूली दिनों में दो मित्रों का होता है। ओशो उसको नोट्स बना-बना कर देते उसकी पढ़ाई-लिखाई में मदद करते थे और जैसी शैतानियां, मजाक या खेल-कूद आदि उस उम्र में होता है वह सब था।

प्रश्न- ओशो गुरु बन गए, संन्यास देने लगे कुछ लोगों को यह बात अखरने लगी थी। ओशो की इस छवि को स्वीकारना या उनसे संन्यास लेना घर वालों के लिए कितना आसान या मुश्किल था?

उत्तर- शुरू-शुरू में तो मुश्किल था। मैं अपनी बताऊं, मेरा संन्यास लेने का अंतरभाव तो था, परंतु ऊपर से यह बात मैं अपने पति को नहीं कह पाई थी। मैं अपनी नानी के गुजरने के बाद तेरहवी के लिए अपने पति व बच्चों के साथ वहां गई तो ओशो का जमघट वहां जमा ही था, ४०-५० लोगों से ओशो घिरे थे, उनके प्रवचन चल रहे थे। लोग संन्यास ले रहे थे तब एक माला उन्होंने मेरे लिए संभाल कर रखी थी। जब मैं पैर छूने गई तो उन्होंने धीरे से कहा 'रसा क्या संन्यास लेना है? ' मैंने कहा 'दे दो' उन्होंने माला गले में डाल और एक कागज पर नाम लिख दे दिया। यह सब देखकर मेरे पति गुर्रा रहे थे, उन्होंने अपनी आंखे गुस्से से लाल कर ली और बोले 'तूने मेरे से पूछे बिना संन्यास ले लिया।' इसीलिए उन्होंने साल-छः महीने तक मेरे लिए भगवा वस्त्रों की भी व्यवस्था नहीं की। मैंने अपनी एक-दो साड़ियां जो हल्के रंग की थी उन्हें गेरुए रंग में रंगवा कर पहनी। ऐसे मैंने दो साड़ियों में एक साल गुजारा पर धीरे-धीरे उन्हें मेरी बात समझ आने लगी, फिर तो वह मेरे लिए वस्त्र भी ला देते थे। स्वीकारने भी लगे थे फिर बहुत बाद में तो उन्होंने भी ओशो से संन्यास लिया।

प्रश्न- पूना आश्रम के दौरान कोई ऐसी बात जो उन्होंने आपसे साझा की हो?

उत्तर- ऐसी तो कई बातें हैं पर एक बात जो वो कई बार कहते थे, वो ये कि 'मुझे यहां लोग समझ नहीं पा रहे हैं। यहां मेरा काम बहुत सीमित हो गया है, मुझे अपना काम पूरी दुनिया में फैलाना है। जब तक बाहर नहीं जाऊंगा तब तक वह काम फैलेगा भी नहीं।'

प्रश्न- ओशो ने जब शरीर छोड़ा तब आप कहां थीं, आपने उस घटना को किस तरह से लिया?

उत्तर- ओशो ने जब शरीर त्यागा तब मैं वहां नहीं थी। मुझे ओशो की मृत्यु की कोई खबर नहीं मिली, वह खुद आए। मैं बगीचे में शाम को पांच बजे कुछ बीज बो रही थी, उस दिन नौकर नहीं आया था और समय निकला जा रहा था इसलिए मैं बड़े गुस्से में थी इतने में ओशो एक तेज सूर्य की तरह पीछे से आ गए, जबकि सूर्य डूबने को था, तब पता चला वह प्रकाश सूर्य का नहीं था। फिर उन्होंने कहा 'रसा तू जो भी करती है होश से किया कर' यह उनका अंतिम उपदेश है मेरे लिए। जब यह बात मैंने सुनी तब मुझे नहीं पता था कि ओशो शरीर त्याग चुके हैं। जब मैं उठकर कमरे तक आई तो मुझे महसूस हुआ कि वह साथ-साथ चल रहे हैं यहां तक कि मैंने उनके गाऊन को भी हिलता हुआ महसूस किया। मैं पलंग पर बैठी ही थी कि दिल्ली से प्रतीक्षा (भतीजी) का फोन आता है। मैं बहुत ऊर्जा से भरी थी इसलिए मैं फोन उठाने के लिए अपनी बहू को बोलती हूं। इससे पहले कि बहू फोन पर कोई उत्तर देती, हंसते-हंसते मेरे मुंह से निकला कि 'ओशो ने देह छोड़ दी क्या?'

यह सुनते ही बहू मेरी तरफ देखने लगी और बोली कि प्रतीक्षा दीदी भी फोन पर यही कह रही हैं कि ओशो ने देह छोड़ दी। मैंने कहा- वो मुझे तो आकर बता गए हैं कि वह जा चुके पर फिर भी वह कहीं नहीं गए हैं।

आज आश्रम में भी जाओ तो उनका आभाव नहीं लगता उनकी मौजूदगी अभी भी महसूस होती है। इस बात का मैं अहंकार नहीं करूंगी पर सच बात तो यह है कि मुझे जब उनका सान्निध्य चाहिए वो मुझे सदा मिल जाता है।

-शशिकांत 'सदैव'
संपादकः 'साधना पथ' मासिक पत्रिका